भावी शिक्षकों को सिखाया लैंगिक समानता का पाठ, भेदभावमुक्त शिक्षा पर जोर

डायट बड़कोट में जेंडर संवेदीकरण कार्यशाला, कक्षा-कक्ष से लेकर समाज तक समानता की सोच विकसित करने का दिया संदेश

चिरंजीव सेमवाल

उत्तरकाशी। विद्यालयों में बालक और बालिकाओं को समान अवसर, सम्मान और सहभागिता मिले, इसके लिए भावी शिक्षकों को जेंडर संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाया गया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) बड़कोट में शुक्रवार को जेंडर प्रकोष्ठ की ओर से डीएलएड प्रशिक्षुओं के लिए एक दिवसीय जेंडर संवेदीकरण कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें लैंगिक समानता और भेदभावमुक्त शैक्षिक वातावरण को लेकर प्रशिक्षुओं को जागरूक किया गया।



कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के प्राचार्य हेमू बिष्ट के मार्गदर्शन एवं प्रेरक संबोधन के साथ हुआ। उन्होंने कहा कि एक आदर्श शिक्षक के लिए केवल विषय का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका लैंगिक रूप से संवेदनशील होना भी जरूरी है। शिक्षक की भूमिका कक्षा में पढ़ाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह समाज में समानता, सम्मान और सकारात्मक बदलाव की सोच विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कार्यशाला में लिंग एवं जेंडर की अवधारणा, जेंडर भूमिकाओं में अंतर, लैंगिक रूढ़िवादिता, सामाजिक मान्यताओं, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक समाजीकरण और जेंडर लेंसिंग जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में लैंगिक समानता के प्रावधानों और जेंडर इक्विटी क्लब की भूमिका से भी प्रशिक्षुओं को अवगत कराया गया।

खेल से नेतृत्व तक, हर क्षेत्र में समान अवसर पर जोर

कार्यशाला में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के प्रति अलग-अलग अपेक्षाएं और पारंपरिक धारणाएं बच्चों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती हैं। खेलकूद, कक्षा गतिविधियों, नेतृत्व और अन्य शैक्षिक अवसरों में सभी बच्चों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। प्रशिक्षुओं को बताया गया कि परिवार, समाज, पाठ्यपुस्तकें और विद्यालयी वातावरण बच्चों की लैंगिक सोच को आकार देते हैं। ऐसे में भावी शिक्षकों को अपनी शिक्षण पद्धति में समानता और समावेशिता को प्राथमिकता देनी होगी।

कार्यशाला का समन्वयन एवं संचालन गोपाल सिंह राणा और बबीता सजवाण ने किया। उन्होंने विभिन्न गतिविधियों, उदाहरणों और सहभागितापूर्ण चर्चाओं के माध्यम से प्रशिक्षुओं को जेंडर संवेदनशीलता की व्यावहारिक समझ विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

डीएलएड प्रशिक्षुओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। कार्यशाला के समापन पर प्रशिक्षुओं ने संकल्प लिया कि वे भविष्य में अपने विद्यालयों में लैंगिक समानता, पारस्परिक सम्मान, समान अवसर और भेदभावमुक्त वातावरण को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्य सुशील चंद्र जोशी, टीकाराम सिंह रावत, डॉ. सुबोध बिष्ट, मो. अरशद अंसारी, अरविंद चौहान सहित अन्य मौजूद रहे।

शिक्षकों को दिया लैंगिक समानता का प्रशिक्षण



जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बड़कोट में आयोजित प्रशिक्षण के समापन पर डीएलएड प्रशिक्षुक। संवाद

बड़कोट। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में डीएलएड प्रशिक्षुओं के लिए एक दिवसीय जेंडर संवेदीकरण कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें प्रशिक्षुओं को विद्यालयों में लैंगिक भेदभाव दूर करने और बालक-बालिकाओं को समान अवसर उपलब्ध कराने के प्रति जागरूक किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के प्राचार्य हेमू बिष्ट ने किया। कार्यशाला का समन्वयन एवं संचालन गोपाल सिंह राणा और बबीता सजवाण ने किया। इस अवसर पर सुशील चंद्र जोशी, टीकाराम सिंह रावत, डॉ. सुबोध बिष्ट, मो. अरशद अंसारी, अरविंद चौहान आदि मौजूद रहे। संवाद


GENDER EQUALITY

